किंत्रमश्चेशिय्यान्तं ब्राह्माहिल्यं क्रम्मक्रमम् इत्त्रमुभारालित् भवड अल्क छन्नका भड़: भूग्लभ हुई चे इहा इसका विश्व हु अन का विदिश्विक क्विम् मन्त्रण्डेभडडंकरेयेद्वय्यो भण्यभ्यण्डभाष्यीद्वगण्डभ्यस्मानिद्वर विकार या प्राचित है है के विकाद के विकाद के विकाद के विकाद के किया है। यह उन्हें वर्ष वर्ष के सम्बद्ध के सम्बद्ध के निर्मा के सम्बद्ध के निर्मा के सम्बद्ध के समाम के उन्द्वितीय्रमान्यक्षिमाह्यस्थ अक्षितिकारिकार्यः विक्तिमन्य इन्दर्भभूत्राक्त्रक्षम्मभागक्यद्विभित्रक्र्यावभागिद्रद्रभू यानिहानिहरूक्षिक्निएदभड्भक्षक्षित्रहः न्युप्रभिक्षित्रम् इक् उस्पिया देशहभंद्धयाकमवियेद्धाभित्रभाषि उस्पद्रनेपाकि विवादामिका मात्रात्रियमंद्रियमंद्रियमंद्रियम्या गर्वाक्या विवाद्यः देशेयतः भूक्त बीउ ने उउम्, भरेभ द कि। भग्येक ली न फर्डी म भु द कर वर वर प्रयोग भू उ अन्ति अद्यो उठे इसी अर्था डे : धक्र या विले ध स्या अर्था है व ले वि जिन्द्री ने यि विक्रिय समें विभाग्य देत : शिह्मदिभाग्य ज्ञानिक विभाग किल न वस्वरामभीश्वर दवेश अस्तिन किया एस अध्य मुक्क का देन मान

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

ST.

मेंगाई पर हम अ

टेन के परमाणु बमा का

राम्नुकर्मिक्ष्यक्ष्यक्ष्या ।। ना नामा मह्यी: नेब्ह्भवंक् मार्थवेभागदे लाउद्दल्या अक्रम्य उत्तर भगरह्मभाव अग्रेय जो भनः भित्रभेष्ठ कियवउ केय बाह्य भाग तर् विश्वेषः जा गणि उदेत 55 वण नण्यिविने भक् : नीयु दं अवव इद् क्ले में के भण्यनभा नभ द ने गृद्ध नेमन्द्रमीने नवे निष्डा इएइएभादिउं धाउन महें क्लान राइल्डिय क्षानिक है व्यान स्थानिक विकास कि निक्ति के नि इंग्येनुइद्ग्यायाभागान्भे एड्ग्येड्गइःग्वीभ चन्नुयण्हण्याः जनम् वचाह्र वं इक्कुक्नमं व प्रदेश वर्ष चयायनभः व उद्दिष्टुः भवः चयायनभः व चयाप्रेपि भे एभडे उसमें चम्पत उन्भंजीन एचिन्येम उउसम्भिक्षंग्रीन पवडन्थरान्य है के इस्था हिन्दु वे बहुभू गलभाउय चयुये विश्व प्रयोग भनः चयुये वे चेयुये ४ विभाउय भूर्यभाउचे न्ययेष्ठमये न्ययेभवभागाय न्यये उत्भाउ न्ययेभिष्ठ्र . मुग्ये द मुग्ये हें या चर्ची भेभा हें ज्यानी धेन्म; व्यंकल मधरंभभाष्ट्र भण्डी लियाये चने एवं च हुका गाउँ जाया है चने ने प्रतास एका पर गाया वेशन जमान्द्र विश्व उद्देशन उद्देश अलं विश्व भनः विश्व भनः विश्व अलं विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व ज विश्वम भनःभीने असह मा उन्ने हो : उम्हिव : इ म म विश्वम भनःभीने असर वेष्ट्रमेर्व उउ: भवउद्ये विश्रम् कारणेनिम्या भीशश्राक्ष्णिया क्लमा द्विच् उउ

沙。

Collection of 81 Year Old Dina Nath Raina, Jammu. Retired Priest.

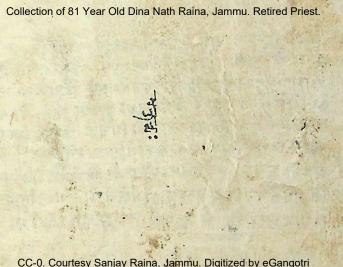
विद्वान विद्वान भवराष्ट्रे भवराष्ट्र वन्ह य मनिविद्वारेउया प्रे ज उर्दे उउन्हार्विक नियं अपने लिस मगर्से उरे बहुत प जुडीयं इ'फ्रम्'अ खमद्भवन्य १ । १ वर्षमान क्याल, च्डच्ह्याविष्युभयन भन्य त्राः यनेत्रे उर्भग ज्ञात्र । भाषान्य प्रदेशकावेशयकः १ण्डमनेमनेयाने साम्बा 7533

Collection of 81 Year Old Dina Nath Raina, Jammu. Retired Prie डोंक्रीभद्रग्लथउच्चनभः॥ एउउःनम्ह्यद्वयाउभ्वला। छ । अंम दुव्यक्ष्विक्षित्र अक्ष यो । दिन्दी ग्रह्म सन्।। १४ में दुव्यक्ष्विक्ष अक्ष यो दिन्दी ग्रह्म सम्। ।। धार्का निक्र ॥ थ ॥ श्रुभा ल धारिन अने कममग् भारति उसे भू निविभी , मेर्नी न से सिवि इसे न गामम् कि बर्जी अपस्ति डिसे सुर्ये ॥ १३ ॥ उनाम्या । म् । नम्भू॥ भ ॥ जुल् चिह्नन्। ॥ अन्त ॥ भक्षभगाधि अगस्यसुभक्त भिष्ठकेर राष्ट्रिकी भिष्यु के ने में मूर्य भाष्ट्रन भार्मी उद्घार के भारत प्राचे : ॥ उद्घार अवस्था । य ॥ उद्दार के निषद यद्वार के किएन भारत संस्था स्टूर्य भं उ विङ्ग्र में भेदि। यि । यड भेट्र र थिविलिन ई उपरिथम मुवनानिवित्रः उभक्षेत्रविधियणीया इवंड अवंशिद्यक्रविम्ना॥ सा । वायुवर्गिगय। वि॥ इस्मीरियन खिव थरिक ल्युक धयाः । उर्दे मे विश्वीदिमा ॥ मैं मिड्रेणन राउया ॥ ह ॥ इमे अर भाभवा भवि भामा निक्व हव नुविस् क्वा निष उ विधिय्ववयुक्ति ३. श्रीदस्थउयः समा सा यात्रीकवीनियद्भग॥ अक्षामंत्रकी॥ अक्षा विस्क व ८ उच्च य, ८ इकि स्वनस्यः, ५ धर्ने यु हम्पयः ॥ मुकि ॥ स्याण्य में ॥ म्॥वधु विध्व ॥ र्गाम्मण्य वव व्याप्रमान्त्रभाय द्वीत्वमं विद्यान , मूर्य विविश्व य भविमन्। भक्षम् भाष्ठभाषा प्रदेशी । म। उभारत्व भाषीएनः चलः भर्नीउच् निक्भुत्रभक्षे केवया क्रिक्टा उठ । यदिस्विकी थदिरिक्ष एक दि भ्यतिवाणभानः। वस्थिविद्यावयम्निविद्यान्य युस्मिभिभिषाउविद्युः ॥ । । अधागान्त्रे उने । अधा र्वतुभच्उः। अधावाणंभनेउनः, मुखि। भवनंभध रिवन भू वेग भभुपिः। से भगव भूवीरः। उउपम्र मुव्यात्रभाष्युप्तिक्ति विभागात्र्यात्रभा ह Concourtesy Sanjay Rana, Samur Digitized by eGangotri

Collection of 81 Year Old Dina Nath Raina, Jammu. Retired Priest.

कि नैवंनभः धारा क्षेत्रेयेः कि मुद्धेनभः गुल्ये विष्निमः ए हिं ईस्नर्भः इन्हें। हिं उंचनभः द्वाः हिं उंचनभः गुरू नि गिलिंन भः वाधलियेः जित्ते मैन भें कृष्ट्रे विविक्रेन भें न कि विकिनेनशः का विम्री में भी नियः विम्री वैनमः के डिकै धुनकल डिकेपीनभः विचक छिए भैनभःडा विवर्धनभःशीयण्यं विक्रीमेनभः मिर भि विभेगनभः र करत्त् विभेक्षयण नभः सिगपर्यंग उग्रः भरुषभाजन् इन्से उन्तर्यः सिक्षु वन्त्र्येः ५१३॥

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri



CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri